RJPP, Vol. XXI, No.I, Oct.22-Mar.23, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, Impact Factor 8.858

अटल बिहारी वाजपेयी जी की विदेश नीति के विकास में योगदान

डॉ० हरीश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
एम०एम० (पी०जी०) कॉलेज,
मोदीनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)
ईमेलः kumarharish0430@gmail.com

रविन्द्र कुमार
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
एम०एम० (पी०जी०) कॉलेज,
मोदीनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

सारांश

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का विदेश नीति से बहुत लगाव रहा है। जब 20 जनवरी, 1977 को गैर कम्यूनिस्ट विपक्षी दलों ने मिलकर ''जनता पार्टी'' के गठन की घोषणा की और 16 से 20 मार्च, 1977 तक लोकसभा के चुनाव हुए। इन चुनावों में श्रीमति इन्दिरा गांधी बुरी तरह पराहित हुई। 24 मार्च, 1977 को मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और श्री अटल बिहारी वाजपेयी को विदेश मंत्री के पद पर नियुक्त किया गया। विदेश नीति में विशेष रूचि होने के कारण श्री वाजपेयी ने अपने कार्य क्षेत्र में विशेष रूप से अद्‌भूत कौशल का परिचय दिया। उन्होंने अनेक देशों की यात्रा की व पारस्परिक संबंधों को दृढ़ करने पर बल दिया। हमने अपनी विदेश नीति में एक नए सूर्योदय की कल्पना की जिसके प्रकाश में युद्ध की विभीषिका से बचने केलिए विश्वव्यापी, कल्याणकारी व एक नई विश्व व्यवस्था की रचना पर निरन्तर बल दिया गया।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 09.02.2023
Approved: 21.03.2023

डॉ० हरीश कुमार,
रविन्द्र कुमार

अटल बिहारी वाजपेयी जी की विदेश नीति के विकास में योगदान

RJPP Oct.22-Mar.23,
Vol. XXI, No. I,

pp.123-131
Article No. 17

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2023-vol-xxi-no-1

श्री वाजपेयी ने विदेश नीति के निर्माण में नीति नियोजन समिति के महत्व को स्वीकारते हुए नीति नियोजन समिति के नियोजिन पर विशेष बल दिया जिससे नीति में स्पष्टतः व पारदर्शिता विद्यमान रहे। श्री वाजपेयी ने अपनी विदेश नीति में वसुधैवकुटुम्बकम की भावना को सबसे ऊपर रखा। 4 अक्टूबर, 1977 को संयुक्त राष्ट्र संघ के 32वें अधिवेशन में भारत के तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने सम्बोधन में कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ विभिन्न राष्ट्रों के केवल सरकारी प्रतिनिधियों का ही मंच नहीं बल्कि इस विशाल मंच को मानवता का सामान्य एवं सामूहिक व्यक्ति की आवाज का साधन बनाया जाए। पुरातन समय से सारे संसार को हम एक परिवार समझते रहे हैं यद्यपि कभी–कभी भौगोलिक सीमाओं ने हमारा रास्ता रोका तो कभी राजनीतिक सीमाओं के महत्व की चिंता रही, लेकिन संसार को एक परिधि में समेटने के लिए ही संयुक्त राष्ट्र संघ का जन्म हुआ। अपने निरन्तर एवं अथक प्रयासों से ही आज सम्प्रभु राष्ट्र संघ विश्वव्यापी हो सका है और अब प्रायः सारे राष्ट्र उसकी छत्रछाया में आ गए है।

राष्ट्र के महत्व के स्थान पर सामान्य व्यक्ति के सम्मान की बात सोचना अधिक श्रेयस्कर होगा। हमारे प्रयास में कितनी सफलता मिलती है उसका मूल्यांकन करने का पैमाना यह होना चाहिए कि हमारे कार्य से मानवता को क्या व कितना लाभ हुआ है? क्योंकि व्यक्ति समाज अथवा संसार का बीज है। समाज के उत्थान तथा विकास के लिए उसके (बीज) व्यक्ति का उत्थान तथा विकास अत्यन्त आवश्यक है। विश्व का सारा वैभव और उत्थान का कोई मूल्य नहीं, यदि एक भी व्यक्ति की आँख में आँसू शेष रह जाएं। मानवता का प्रतिनधित्व करने वाले राष्ट्रों का सर्वोच्च कर्त्तव्य यह है कि सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सबसे पिछड़े क्षेत्र में बसे गरीब परिवारों को भी मिले। स्वतन्त्रता व सम्पन्नता का सुखद अनुभव सभी देशों में समान रूप से महसूस किया जाए। जीवन को उपयोगी बनाने का अधिकार सभी को मिलें।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपनी विदेश नीति में उपनिवेश का विरोध किया उनहोंने संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में कहा कि भारत ने पहले से ही ऐसी व्यवस्था की कल्पना की है जिसमें रामराज्य के गुण विद्धमान हो जिसमें समाज के प्रत्येक प्राणी को आत्माविश्वास और अभिव्यक्ति की पूरी आजादी का समान अवसर प्राप्त हो। हमारे धार्मिक व दार्शनिक मानस का प्रमुख केन्द्र बिन्दु मानव है। आदिकाल से आज तक हम पारस्परिक प्यार व सहिष्णुता पर जोर देते चले जाए है। महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी जी का उपदेश हमारी रग–रग में समाया हुआ है। हमने कभी पराई धरती पर लालच की दर्षष्टि नहीं डाली। उपनिवेशवाद का हम सदा से विरोध करते रहे और हमने कभी भी अपने उपनिवेश दूसरे देश में स्थापित नहीं किये।

हमारी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में निरन्तर सर्वोच्च स्थान मानव और उसके सुख व कल्याण तथा उसकी मूलभूत एकता को मिला है। हम सदा ऐसे मानव समाज की कल्पना करते आए है जिसकी संवेदनाएं और अपेक्षाएं, सुख और दुःख हमारे सभी प्रयासों का केन्द्र बिन्दु हो। हमारी विदेश नीति का प्रमुख तत्व शान्ति स्थापित करना रहा है। इसका प्रत्येक पक्ष मानवता का प्रबल समर्थक है। हमारे सभी प्रयास इन्हीं लक्ष्यों की ओर संकेत करते हैं। शान्ति का मतलब युद्ध न होना नहीं, बल्कि ऐसी परिस्थितियों की स्थापना है जिससे युद्ध असंगत लगे व मानवता, नैतिकता तथा सब

कि हितों की रक्षा हो इसलिए हमने सदा शस्त्रों के जमाव की आलोचना की है। प्रत्येक राष्ट्र अपने–अपने राष्ट्रीय हितों का संरक्षण संवर्धन एवं समर्थन करता है परन्तु यह प्रक्रिया बन्द ताले में बैठकर नहीं की जा सकती। इसके लिए परस्पर सहयोग एवं निर्भरता अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए हम सभी को चाहिए कि अपनी सीमाओं के पार भी दृष्टि दौड़ाएं और एक–दूसरे के सहयोग के लिए सदा ईमानदारी के साथ तत्पर रहे। श्री वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के मच पर वियतनाम समाजवादी गणराज्य का संयुक्त राष्ट संघ में प्रवेश का स्वागत किया।

अटल बिहारी वाजपेयी जी का रंगभेद संघर्ष

श्री वाजपेयी ने अपनी विदेश नीति में रंगभेद नीति का जोरदार तरीके से विरोध किया। हमेशा से गोरी चमड़ी वाले लोग काली चमड़ी वालों को नीच, असभ्य मानकर उन्हें हीन–दृष्टि से देखते रहे है। ये बात मानवता के खिलाफ है। रंगभेद का यह संघर्ष पूर्ण रूप से समाप्त होना चाहिए। श्री वाजपेयी ने अपनी विदेश नीति में पश्चिम एशिया में विश्व शान्ति के खतरे की और संकेत करते हुए कहा कि– मात्र सिद्धान्त की आड़ में एक देश दूसरे पड़ोसी देश पर आक्रमण कर दे और उस आक्रमण से लाभ उठाएं यह बात अनुचित है। सिद्धान्तों का मतभेद आमने–सामने बैठकर शांतिपूण वार्ताओं के द्वारा भी सुलझाया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में हमें अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग व राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के बीच एक सन्तुलन की आवश्यकता है। यद्यपि इस प्रक्रिया में हमें अनेक अन्तर्विरोध एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। 30 वर्षों से अधिक समय की यात्रा के पश्चात् आज संसार की अर्थव्यवस्था पहले से अधिक स्पष्ट एवं पारदर्शी प्रतीत होती हैं किसी देश की आर्थिक स्थिति उसकी ही सीमाओं में बंधकर नहीं रहती। दरिद्रता के मरूस्थल में कोई एक राष्ट्र समूह समृद्धि का नखलिस्तान बनकर।

गुटनिरपेक्षता का महत्व

''जनता पार्टी'' के विदेश मंत्रालय की अनुदानों की मांग पर बहस प्रारम्भ करते हुए श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 29 जनू, 1977 को लोकसभा में कहा– विदेशी नीति विवाद का विषय नहीं है। ''जनता पार्टी'' ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में वास्तविक गुटनिरपेक्षता का समर्थन करेंगी। इसी बहस के दौरान श्री वाजपेयी ने लोकसभा में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि भारत को न केवल गुटनिरपेक्ष रहना है बल्कि गुटनिरपेक्षता का आचरण करके भी दिखाना है। हमारे कहने और करने में बालभर भी अन्तर नहीं आना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो हमारे संबंधों और हमारी छवि को लेकर राष्ट्रों को भ्रम उत्पन्न हो सकता है। लोगों को हमारी निष्ठा पर संदेह हो सकता है। हमें किसी गुटविशेष से बिल्कुल सरोकार नहीं है। गुटनिरपेक्षता की दुधारी तलवार की धार पर चलने का निर्णय हमने सोच–समझकर पूरे होश–हवाश में लिया है। इस दुर्गम यात्रा पर कदम रखने से पहले हमने इसके सभी खतरों और जोखिमों पर पूरी तरह से विचार कर लिया है। अपने देश के हित को मद्देनजर रखते हुए हमने स्वतंत्रता पूर्ण अधिकारों का उपयोग किया है।

गुटनिरपेक्षता की नीति को किसी एक व्यक्ति अथवा पार्टी ने नहीं अपनाया है बल्कि उसे सम्पूर्ण राष्ट्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा भौगोलिक वातावरण के आधार पर राष्ट्रीय हित का ध्यान

रखते हुए ही स्वीकारा गया हैं हम साम्राज्यवाद की जंजीरों को तोड़ कर दासता की एक लम्बी और अंधकारपूर्ण सुरंग पारकर स्वतंन्त्रता के सूर्योदय का दर्शन कर पाए हैं। हमें महाशक्तियों के शोषण का पूरा–पूरा अनुभव है। इसलिए हमने यह नहीं चाहा कि हम आकाश से गिरकर फिर खजूर में अटक जायें, और अपनी स्वतंत्रता की धरती से विरक्त हो जायें। इसलिए हमने इनसे एक नियमित व मर्यादित दूरी बरतना पसंद किया और किसी गुट की झोली में नहीं पड़े चाहे वे कितने भी आकर्षक क्यों न रहें हो फिर भी बैर नहीं पाला ''ना काऊ से दोस्ती, न काऊ से बैर'' हमने निष्पक्ष गुटनिरपेक्षता की नीति को स्वीकार किया। यह विचार हम भारतीयों के ही मस्तिष्क की उपज थी। आरम्भ में यह विचारधारा दूसरों के लिए काफी अटपटी थी परन्तु जब इस पर गहन चिन्तन किया गया तो कई ऐसे अन्य राष्ट्रों ने तुरन्त स्वीकार कर लिया, जिन्हें नई–नई स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी या जो गुटों की कटीली झाड़ियों में पड़कर बुरी तरह से लहुलूहान हो चुके थे। उनके लिए गुटनिरपेक्षता एक जीवन रक्षक मरहम प्रमाणित हुई। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इस नीति का स्वाभाविक रूप से स्वागत किया गया क्योंकि प्रायः सभी नए स्वतंत्र देशों को ऐसे ही मुक्त वातावरण की आवश्यकता थी। रचनात्मक रूप से इस विचारधारा का स्वागत किया गया और इसका विस्तार किया गया। पहले यह एक बूंद बनकर आगे बढ़ी, फिर इस नन्हीं धारा को अनेक उत्साही धाराओं का समर्थन प्राप्त हुआ। एक स्वर जो पहले निकला था कालान्तर में एक आंदोलन का रूप लेकर विशाल सागर के समान प्रस्तुत हो गया। समय के उस लम्बे सफर के बीच इस आंदोलन की सार्थकता सिद्ध होती चली गई। शस्त्र और सत्ता को चाहने वाले राष्ट्र विस्तार व विजय प्राप्ति की अभिलाषा में अपने आपको लिप्त रखते हैं। वे शक्ति के सर्वोच्च शिखर पर जमकर बैठना चाहते है। उनकी लालचपूर्ण लालसा ने उनसे मन का सुख चैन छीन लिया है और उन्हें इस अनजानी क्षति का लेशमात्र मलाल नहीं है क्योंकि उनका लक्ष्य शान्ति नहीं बल्कि शक्ति का सर्वोच्च शिखर है विश्व को देखने के लिए ये सत्ता लालची (राष्ट्र) शान्ति की बड़ी–बड़ी बातें करते है। श्री वाजपेयी में गुटनिरपेक्षता के संदर्भ में कहा कि आज गुटनिरपेक्षता का विजय घोष सारे संसार में गूंज रहा है। सम्पूर्ण मानव जाति इससे अनुप्रमाणित होने लगी है। संसार के आधे से अधिक राष्ट्र गुटनिरपेक्षता के प्रभाव में आ गए है।

आज जब शांति, आपसी समझदारी तथा एक दूसरे पर निर्भर रहने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। तब ऐसी स्थिति में भारत अपने हितों की रक्षा करने तथा अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी में सामाजिक समानता व न्याय की आवश्यकता के लक्ष्य पर जोर देना अपनी नैतिक व राजनीतिक अनिवार्यता मानता है। फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हमारी सफलता एवं छवि एक विवेकपूर्ण विदेश नीति पर निर्भर नहीं है बल्कि यह बात इस तथ्य से देखी जानी चाहिए कि हम एक राष्ट्र के रूप में कितने मजबूत और दृढ़ हैं। इस स्थिति के लिए हमें अन्दर से शक्तिशाली होना पड़ेगा और आर्थिक व्यवस्था दृढ़ करनी होगी। जब हम स्वयं पुख्ता होगें तब ही अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर हम कुछ कहने योग्य हो पाएंगे और तब ही हमारी बात का महत्व समझा जायेगा। राष्ट्र हमारी बात को सुनेगे, हमारी प्रत्येक बात को सम्मान मिलेगा, हमारे राष्ट्र को पूर्ण सम्मान मिलेगा।

हम एक प्राचीन, महान, सभ्यता, संस्कृति तथा सहिष्णुता के उत्तराधिकारी हैं। विशाल जनशाक्ति के साथ प्राकृतिक सम्पदा एवं कड़ा परिश्रम हमारी परम्परा रही हैं इसके आधार पर हमें

अपनी मानसिक क्षमता, आत्मसंयम और परिश्रम के साथ कदम बढ़ाने की आवश्यकता है जिससे हमारी शक्ति बढ़ेगी और संसार में हम सिर ऊँचा करके चल सकेंगे। इतिहास साक्षी है कि हमने कभी विस्तारवाद में विश्वास नहीं किया। हमने धरती और शरीरों को जीतने की कोशिश नहीं की बल्कि हमने ह्रदयों पर विजय प्राप्त करने की बात की। उसी विजय को स्थायी व महत्वपूर्ण माना। यही हमारी मानसिक विरासत है, यही हमारी पूँजी है।

अटल बिहारी वाजपेयी स्वतंत्रता व अखंडता की रक्षा के पक्षधर

पड़ोसी देशों से हमारे संबंध मधुर, सहयोगपूर्ण व विश्वासपूर्ण होने चाहिए, इन सम्बन्धों में प्राथमिकता बरतनी चाहिए जिस प्रकार हमें अपने विकास पर ध्यान देना चाहिए, उसी प्रकार राष्ट्रीय अखण्डता और स्तन्त्रता की रक्षा करने वाले अपने कर्तव्यों का भी पालन करना चाहिए। सच्चे पड़ोसी का कर्त्तव्य है कि वे एक–दूसरे की राष्ट्रीय एवं भौगोलिक महत्वाकांक्षा में हस्तक्षेप न करें और इसके इसके साथ एक–दूसरे के सुख–दुख में बराबर साझेदार बनें। जहां इतिहास हमें भविष्य के लिए सचेत रहने की शिक्षा देता है, वही मानवीयता और सहिष्णुता हमें अतीत के सन्देहों और भूलों को भूलाकर भविष्य के नए सहयोग, सद्भावना और स्वेच्छा के प्रशस्त पथ पर चलने की प्रेरणा देती है। हम पंचशील के अडिग सिद्धान्तों में विश्वास करते हैं। यह हमारी राष्ट्रीय आचरण की बहुत बड़ी धरोहर और मशाल है। हमें पिछड़ेपन, गरीबी और निर्धनता जैसी भयानक समस्याओं का सामना समझदारीपूर्ण करना चाहिए, क्योंकि इन समस्याओं का विवेकपूर्ण समाधान देश का प्रथम कर्त्तव्य है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 22 जुलाई, 1977 में संसद में विधिवत इस बात की पुष्टि की कि भारत के लोग शान्तिमय और वैध तरीकों से देश में एक ऐसी आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए कृत संकल्पित है जो लोकतांत्रिक भावनाओं से प्रदीप्त हो, समाजवादी आदर्शों से अनुप्रणित हो और नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की आधारशिला पर सुदृढ़ रूप से स्थिति हो।

भारत ने सदैव ही राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अनावश्यक रक्तपात और हिंसा का विरोध किया है। अहिंसा में आस्था रखते है और चाहते है कि विश्व के संघर्षों की समाधान शांति और समझौते के मार्ग से हो। श्री वाजपेयी ने विदेशी निवेश संबंधी नीति के बारे में लोक सभा में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि स्वदेशी का मतलब यह नहीं है कि हम विदेशी निवेश को महत्व ही ना दे। इसका अर्थ यह है कि हमारे विकास के लिए जितनी मात्रा में संसाधनों की जरूरत पड़े वह स्वयं हमारे द्वारा जुटायी जाए। तथापि इन घरेलू संसाधनों की जरूरत को विदेशी संशोधनों से भी पूरा किया जा सकता है और पूरा करने की आवश्यकता है। एक संरचनात्मक विकास उच्च टेक्नोलॉजी बेहतर प्रबन्ध पद्धतियों के हस्तांतरण निर्यात क्षमता बढ़ाने हेतु उत्पादन की गुणवत्ता के उन्नयन एवं महत्वपूर्ण विश्वव्यापी बाजार संबंध जैसे हमारे विशेष प्राथमिकता के क्षेत्र में विदेशी निवेश का हम स्वागत करते है।

अटल बिहारी वाजपेयी जी का गांधीवादी समाजवाद

श्री वाजपेयी विश्व के प्रगतिशील विचारक राजनेताओं के समान निःशस्त्रीकरण के तीव्र समर्थक रहे व परमाणु शक्तियों के विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द करते रहे। उनको गांधीवादी समाजवाद में पक्की आस्था रही व गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को विश्वव्यापी रूप से चलाने के पक्षधर रहें।

उन्होंने उपनिवेशवाद का विरोध करते हुए एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका की कठिन आर्थिक स्थिति व वहां की स्थानीय जातियों पर गोरी जातियों के अनुचित अंकुश व शोषण का भी विरोध किया। श्री वाजपेयी की विदेश नीति से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे विश्व की निर्बल व शोषित जातियों की अर्न्तआत्मा का ज्वलंत प्रश्न लेकर चले। उन्होंने शोषण करने वाले राष्ट्रों का विरोध किया।

प्रवासी भारतीयों के न्यायोचित अधिकारों का समर्थन

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अप्रवासी भारतीयों के साथ ही प्रवासी भारतीयों के न्यायोचित अधिकारों का भी जोरदार समर्थन किया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1988 में न्यूयार्क की राजनीतिक यात्रा की। न्यूर्याक वैसे भी अवरूद्ध–यातायात का महानगर है, परन्तु श्री वाजपेयी जी के आगमन से व्यवस्था कुछ अधिक गम्भीर हो गई थी। सैकड़ों मील दूर से व्यवसायियों और सैकड़ों शानदार कारें न्यूयार्क के इस भव्य होटल के आस–पास ठहरने की जगह ढूंढ रही थी। फिर भी न्यूयार्क के पुलिस अधिकारियों को व्यवस्था में तनिक भी दिक्कत नहीं हुई, क्योंकि यातायात व्यवस्था में हिन्दू स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता जुटे थे। श्री वाजपेयी को न्यूयार्क में आयोजित भव्य समारोह में सवा पांच बजे पहुंचना था, परन्तु शेरेटन का दमकता–चमकता सभागृह साढ़े–तीन बजे ही भर चुका था। भीतर गीत दोहराये जा रहे थे, ''वन्दे जननी भारत धरणी'' और ''वन्देमातरम–वन्देमातरम''। यह आयोजन अमेरिका की सभी प्रमुख भारतीय संस्थाओं द्वारा आयोजित सकिया गया था। इन संगठनों में सभी विचारधाराओं के भारतीय शामिल हुए, परन्तु मुख्य व्यवस्था हिन्दु स्वयं सेवक संघ और सागरपारीय भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) मित्र मंडल ने ही संभाली थी। किसी की प्रतीक्षा न करने वाले वैभव सम्पन्न, विद्यागर्वित और काफी कुछ नकचढ़े से अमेरिकी भारतीय किसी की प्रतीक्षा नहीं करते पर इस दिन तो मानो सबके लिए समय ठहर गया था। साढ़े तीन बजे हॉल पूरा भर गया था। प्रतीक्षा का तनाव उत्कंठा की मधुरता में बदल गया था। बीच–बीच में नारे भी लग रहे थे, भारत माता की जय। जहां हॉल में दो हजार की उपस्थिति अपेक्षित थी, लेकिन 2400 से अधिक लोग आये। यहां के लिए यह कार्यक्रम ऐतिहासिक बन गया। आज तक किसी प्रधानमंत्री को अमेरिका की धरती पर इतना भावभीना और उमंग भरा स्वागत शायद ही मिला हो। इतनी भारी मात्रा में प्रवासी भारतीय अपने प्रधानमंत्री के दर्शनों के लिए उमड़ पड़े।

राष्ट्रीय पुनर्निमाण में अनिवासी भारतीयों की भूमिका

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 11 नवम्बर, 1998 में नई दिल्ली में विश्व भारतीय उद्यमी सम्मेलन में अपने भाषण में कहा कि विश्व के भिन्न–भिन्न भागों से इस अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय उद्यमियों के सम्मेलन में भाग लेने आये आप सभी लोगों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। काफी पुराने समय से भारतीय जन रोजगार और व्यापार की तलाश में दूर देशों की यात्रा करते आये हैं। इन यात्राओं के प्रारंभिक समय में परिस्थितियां आसान नहीं थी लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत और लगन से काम किया। लोगों ने अपनी अंतनिर्हित उद्यमिता का परिचय दिया और अपना व्यापार सुस्थापित किया। प्रारम्भिक समय में लोग मुख्य रूप से कनाडा, अमेरिका, चीन, ब्रिटेन आदि देशों में गये। लेकिन वर्तमान समय में प्रवासियों की भूमिका में परिवर्तन आया। महत्वपूर्ण रूप से विशेषज्ञों शिक्षकों, वैज्ञानिकों कम्प्यूटर, इंजीनियरों, प्रोग्रामरों, डॉक्टरों और प्रबंधकों ने उच्च प्रबंधक तथा रचनात्मक

चिंतन के क्षेत्रों में खूब नाम कमाया। इसी तरह व्यापार और उद्योग में भी भारतीय मूल के अनेक व्यवसायियों ने इस तरह की उद्यमिता कुशलता का विकास किया है, जो उनके मेजबान देशों की अर्थव्यवस्था के लिए बहुमूल्य साबित हो रही है। हम ऐसे महत्वपूर्ण लोगों की सफलताओं को स्वीकार करते हैं और उनकी सराहना करते है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे अधिक तेजी से बढ़ता हुआ हिस्सा है– हमारा सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र। इसमें रोजगार व पूंजी निवेश की अपार संभावनायें है। राजग सरकार (भारतीय जनतांत्रिक गठबंधन) इसके विकास की गति तीव्रतर करने के लिए दृढ़–संकल्पित है। सूचना प्रौद्योगिकी और साफ्टवेयर विकास के बारे में राष्ट्रीय कार्यकाल की पहली रिपोर्ट, जिसमें 108 सिफारिशें स्वीकार कर ली गई। इसमें से अनेक सिफारिशों को अधिसूचित कर दिया गया है। इस क्षेत्र के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करने पर बल दिया गया। इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराने वालों के लिए हाल ही में नीति की घोषणा की गई। विश्व की इस सम्भवतः सबसे उदार नीति से भारत की सूचना प्रौद्योगिकी का विकास तीव्रतर होगा।

अर्थव्यवस्था के विकास के लिए दूरसंचार एक महत्वपूर्ण बुनियादी आवश्यकता हैं राजग सरकार ने इस क्षेत्र को निजी पूँजी निवेश के लिए खोलने और इन कम्पनियों को समान अवसर प्रदान करने के लिए अनेक उपाय किए। नई दूरसंचार नीति की घोषणा की, ताकि इस क्षेत्र को बढ़ने का अवसर मिले सके। ग्लोबल मोबाईल पर्सनल कम्यूनिकेशन सेवा को अनुमति दे दी गई और निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 1 नवम्बर, 1998 से इरीडियम परियोजना शुरू की गईं उल्लेखनीय है कि 1991 से अब तक दूरसंचार के क्षेत्र में जो 40 अरब रूपये का प्रत्यक्ष विदेशी पूँजी निवेश हुआ, उसमें से लगभग 50 प्रतिशत 1998 वर्ष के दौरान हुआ। यह इस क्षेत्र में पूँजी निवेश की अपार संभावनाओं और बेहतर अवसरों का स्पष्ट संकेत है।

आर्थिक सुधारों को बरकरार रखने के लिए जरूरी है कि विकास के लाभ का समान वितरण हो। इसलिए यह आवश्यक है कि लम्बे समय से जमा हुए जटिल और दुरूह नियमों के बंधन को हटाना होगा। राजनीतिक व प्रशासनिक हस्तक्षेप को कम करना होगा और भारतीयों की अंतनिर्हित उद्यम कुशलता को फलने–फूलने का अवसर देना होगा। अधिकारी तंत्र की संख्या कम करने और उसे अधिक कार्यकुशल बनाने पारदर्शी व सोद्देश्य सब्सिडी प्रणाली अपनाने और सार्वजनिक क्षेत्र को लाभकारी बनाने की आवश्यकता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। स्पर्द्धा बढ़ने से कार्यकुशलता बढ़ती है, उत्पादन की लागत कम होती है और उपभोक्ताओं को ज्यादा और बेहतर माल व सेवाएं प्राप्त होती है लेकिन बाजारोन्मुख कम नियन्त्रित नीतियों का यह अर्थ नहीं कि हम गरीब और पिछेड़े वर्गों के प्रति अपना कर्त्तव्य भूल जाए। श्री वाजपेयी ने नई दिल्ली में आयोजित सम्मेलन में कहा कि हमारी नीतियां और कार्यक्रम प्रवासियों के न्यायोचित अधिकारों व राष्ट्रीय विकास इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति भली भांति करेंगे।

अनिवासी भारतीय भारत के सच्चे राजदूत

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 26 सितम्बर, 1988 को न्यूयार्क में भारतीय समुदाय के सदस्यों के बीच अपने भाषण में कहा कि जब मैं विदेशों में रहने और काम करने वाले भारतीयों से मिलता हूं

तब मुझे बहुत गर्व का अनुभव होता है और भारत के भविष्य के सुदृढ़ होने के बारे में मेरा विश्वास और भी गहरा हो जाता है। दुनिया भर में अनिवासी भारतीयों की उपलब्धियों ने दिखा दिया है कि भारतीयों की क्या क्षमताएं है। चाहे व्यापार हो, प्रबन्ध हो, वैज्ञानिक अनुसंधान हो, चिकित्सा–जगत हो या फिर कौशल आधारित तकनीकी व्यवसाय हो। जिस देश में भारतीयों ने काम करना पसंद किया, वहां उन्होंने अपना एक खास स्थान बनाया है। ऐसा करके उन्होंने (अनिवासी भारतीय) अपने और अपने परिवार के लिए सम्पत्ति कमाई। देश के लिए वे कीमती विदेशी मुद्रा लाए। भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूत करने में इनका (प्रवासी भारतीय) का महत्वपूर्ण योगदान है और यह उनकी देश भक्ति का भी प्रतीक है।

श्री वाजपेयी ने न्यूयार्क भारतीय समुदाय के सदस्यों के बारे में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रवासी भारतीयों ने अतिथि देश में अपनी मातृभूमि के लिए एक अच्छी छवि बनाई है। इन्होंने अपने पेशेवर सामर्थ्य अपनी रचनात्मक कार्य– शैली और अपनी सांस्कृतिक जड़ों को नुकसान पहुंचाए बिना किसी भी सामाजिक, आर्थिक परिवेश में समरस होने की अपनी क्षमता की वजह से अलग–अलग समुदायों के चहेते बन गए है। आज जिस विश्व रूपी गांव में हम रह रहे है, उसमें बहु–संस्कृतिवाद ने निरन्तर प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में अपना स्थान बना लिया है। श्री वाजपेयी ने अमेरिका में प्रवासियों के संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि अमेरिका में कई भारतीयों संस्थाओं के प्रतिनिधि भी है। यहां जिस विविधता के दर्शन हुए है, वह भारतीय समाज की पहचान वाली विविधता की प्रतिछाया है।

प्रवासी भारतीयों के अनुभव, विशेषज्ञता, ज्ञानाधार और उनके पास उपलब्ध अतिरिक्त धन भारत के लिए अत्यन्त मूल्यवान राष्ट्रीय संसाधन सिद्ध हो सकते है। हम भारत में ही उत्साहवर्द्धक स्थितियां बनाने पर बल देगे, तो आपको प्रेरित कर सकें, ताकि परस्पर लाभ के आधार पर देश में इन संसाधनों को ला सकें। हम नियमों और पद्धतियों को सरल व पारदर्शी बनाएगें। भारत को सूचना प्रौद्योगिकी में महाशक्ति बनाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर राजग सरकार ने सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया। राजग सरकार द्वारा साफ्टवेयर निर्यात, हार्डवेय डिजाइन और विनिर्माण, बुनियादी दूरसंचार, इण्टरनेट की पहुंच को व्यापक बनाने, कम्प्यूटर शिक्षा तथा अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में कई दूरगामी कदम उठाये गये। कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय अभियान ''ऑपरेशन नॉलेज'' चलाया गया। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को कम्प्यूटर शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया। गैर–सरकारी संगठनों के द्वारा ये लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी होगी। हमारा देश (भारत) उन्नति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। एक मजबूत समृद्ध और भारी विश्व शक्ति के रूप में उभरने के लिए हमारे पास आर्थिक क्षमता और सभ्यता जन्य साधन है।

निःसंदेह हमारे देश के सामने कई भयावह समस्यायें है लेकिन एक राष्ट्र एक जन के रूप में एकजुट होकर हम इन समस्याओं पर विजय प्राप्त कर लेगें। भारत स्वतंत्र तथा धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में सदा आगे बढ़ा है। भारत ने अपनी उदार छवि को और दृढ़ बनाया है तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक नई पहचान बनाई है। प्रवासी तथा अप्रवासी सभी के न्यायोचित अधिकारों का समर्थन किया है। राजग सरकार ने इस परंपरा को निरपेक्ष रूप से आगे बढ़ाया व सर्वकल्याण पर

बल दिया। प्रवासी भारतीयों का भारतीय अर्थव्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए भारत में इनके हितों की रक्षा व इनके विकास के लिए महत्वपूर्ण नीतियों का निर्माण करना चाहिए ताकि अपने देश में तथा देश के बाहर ये दृढ़तापूर्वक कार्य कर सकें व अपनी योग्यता व क्षमता का परिचय दे सकें।

संदर्भ

1. विद्रोही, जगदीश., सक्सेना, बलवीर. (1998). प्रधानमंत्री अटल बिहारी वापजेयी. साहित्य प्रचारक. 3011. बल्लीमारनः दिल्ली–110006. संस्करण प्रथम. पृष्ठ **134–137.**
2. (2009). दैनिक जागरण, 4 अप्रैल।
3. विद्रोही, जगदीश., सक्सेना, बलवीर. (1998). प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी. साहित्य प्रचारक. 3011. बल्लीमारनः दिल्ली–110006. संस्करण प्रथम. पृष्ठ **134–138.**
4. कौशिक, अशोक. (2021). राष्ट्रीय अस्मिता के पुरोधा. अटल बिहारी वाजपेयी. अनिल प्रकाशनः न्यू मन्दिर, नई सड़क दिल्ली–11006. संस्करण प्रथम. पृष्ठ **116–117.**
5. प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी. चुने हुए भाषण प्रकाशन विभाग. सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार. पटियाला हाउसः नई दिल्ली–110006. पृष्ठ **124–132.**